# "कोविड काल के बदला समाज"

दो हज़ार उन्नीस [२०१९] का साल में हम धरती वासीयों के बीच एक बिनबुलाया मेहमान की तरह आकर घुसा था कोविड नाम का महामारी। इसे कोरोणा नामक शब्द से भी समूह में पहचाना जाता था। केवल एक छोटी सी बीमारी से शुरू करनेवाले यह महामारी लोगों के जान तक लेने का समान शक्तीशाली थे। कई अधिक लोग इसके कारण मरा हुआ है। कई अधिक लोग इसके कारण अपने शारीरिक स्थिति खो बैठे है। चैना से शुरू हुआ यह अपने समाज के लोगों कई अच्छे और बुरी बदलाव दे चुके थे। अब इस के प्रति वाक्सीनेषण लेता हुआ लोग इससे थोडे से प्रतिरोध करना सीखा है।

'कोविड' ने कई लोगों के दिल में व्याकुलता भरा चलते थे। हम उन लोगों के बारे में सोचना चाहिए जो दिन रात अपने नींद उडाकर हम

लोगों के सहायता करने के लिए प्रयत्न किया है। इस अवसर में, मैं सारे डॉक्टर, पुलिस और आदि लोगों को धन्यवाद का शब्द कहना चाहूँगा। आप लोग यहाँ नही होता थो यह समाज का क्या हाल होता सोच भी नही सकता,

कोविड के कारण हमारे 'शिक्षा शैली' में भी बडा बदलाव आया है। भारत का पहला ओणलैन-शिक्षा शैली को प्रारंभ करते हुए केरल सबीका दिल ही जीत लिया। कोविड के महामारी के समय बच्चों के शिक्षा रोक दिया, 'आगे क्या होगा? इस प्रशन का उत्तर देता 'कैट-विक्टेस' नाम के माध्यम से बच्चों को पढने के अवसर देता हुआ इस सरकार को धन्यवाद कहना चाहिए। इसके अलावा बच्चों के पढने में सहायता किया सारे के सारे अध्यापकों को भी मैं धन्यवाद कहना चाहूँगा जो अपने घर पे रहके भी हमारे अवश्य पूरा कीया है। वे लोग अपने 'फोन या लापटोप' के सहायता से बच्चों को पढाया जाता आ रहा था। यह बात बच्चों को फोन और कई अधिक ओणलैन मीडिया की तरह आकर्षण

किया था। इस में अच्छे और बुरे परिणाम थे, आनलैन के सहायता लेता यह बच्चों के क्रियात्मकता यानी अपने खुद की योजना, यह सब प्रकट करने में बहुत तकलीफ होते देखा जा रहा है। यह कोविड के कारण बच्चों में आया एक बुरी बदलाव है। बच्चों को एक तरह का नशा यानी अडिक्शन से के तरह बांदी थी।

कोविड ने लोगों के कामों में विलंब किया है, इसके वजह से कई लोग बिना ~~खाना-पिना~~ खातेपीते सोया होगा। इस बात में यकीन करता हूँ। जब मैं साथवी में पढ़ते थे तभी कोरोणा वैरस का शुरुआत हुई थी, तब मेरे पिता को भी काम रुकने के आदेश आया वो एक कूपर में काम करते आ रहे थे यह हमारे ~~म~~ जीवन का एक कठोर समय थी, इस स्थिति में कई लोग ~~(- मदद~~ करने के लिए आगे बढ़े चुके थे। बिना जाती की, रंग की, ऊँच नीच बेदबाव किया कई लोग हम जैसे लोगों को मदद किया, यह प्रलय के बात 'प्रलय' के बाद समूह की लोगों की 'एकता' में विश्वास करने मे प्रेरणा

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

देता है। इससे यकीन होता है भले कैसे हाल हो अपने लिए कोई न कोई मदद करने के लिए ज़रूर आएगा। लोकडौण लोगों में बदलाव किया तो ज़रूर है। इसके वजह से कई लोगों के घर पे रहके भी काम करने की अवस्था हो गई। काम की बात करे तो अपनी डॉक्टरों को, पुलिसवालों को, और अध्यापकों को याद करना ज़रूरी है।

कोविड के कारण आया एक अच्छी गुण था प्रकृति को साफ होते हुए देखना, मनुष्य के कारण उबता धरती की ताप किसी तरह कम हुआ था। वायु साफ हुआ आ रहा था इससे वायु मलिन होने से रोका और भारत की बात करे तो दिखता होते आए हिमालय इस समय कुछ और बड़ा हो गया।

कोविड के समय लोग घर पर रहने के लिए निर्भर हो गया, अपने अपनों को किसी भी तरह घर पहुँचना यह बात किसी को भी अच्छी नहीं लगती है। इसके कारण लोग सरकार के दिया हुआ सारे आदेशों के पालन किया जैसी यात्रा कम किया, मास्क पहनना, सोशियल डिस्टन्सींग

सानिटैसर का उपयोग करना सबी।

कोविड के कारण लोग मास्क और सानिटैसर दोनों को अपने जीवन साथी बनालिया। इसके बिना वो कही नही जाना था। अब कोविड थोडी कम होते आ रहे थे लेकिन आज कल न्युज मे कोविड फिर से आने के वास्ता उडते आ रहा है।

कोविड के काल में लोगों के जीवन शैली मे बडी बदलाव हुई। लोग लोकडौण का पालन करने में निरबंधित हो गया। मास्क और सानिटैसर को उसके सच्छा दोस्त बनाथा। मोबैल फोन और कई अधिक ओणलैन - इंटरनेट माध्यमों का सहारे लेते हुआ बच्चों को पढने में बाकि को काम करने में मदद किया। इस समय लोगों में नाकता फिर से बढने का अवसर दिया। लोगों को नाक अपने कुद की आरोग्य को देखभाल करने की हिम्मत और अवसर दोनों दिया। कुद की रक्षा स्वयं करने का तरीका बताते चले गया था कोरोणा नामक के यह महामारी। दोसी परिस्थिति में लोगों के साथ अपने कर्तव्य बिना रोके काम

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 645 Participant Code: 107

करते अपने लोगों को मदद करते आ रहे सारी अधिकारियों को और साथ ही साथ सबको मदद करने का प्रयास किया इस सरकार को मैं धन्यवाद कहना चाहूँगा।

एक बात को हमेशा याद रखना कोविड नामक के यह बिमारी अबी भी इस समाज में है। इससे हमेशा बचके रहना चाहिए इसकेलिए नए बदलावों को भला ही अपनाने को जरूर करना, अपने स्वयं सौख्य रहना ही हमारे पहलौ कर्तव्य है। यह बात को याद दिलाते हुए मैं अपना यह शब्दों को उपसंहार रोक देती हूँ।

धन्यवाद....!

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)